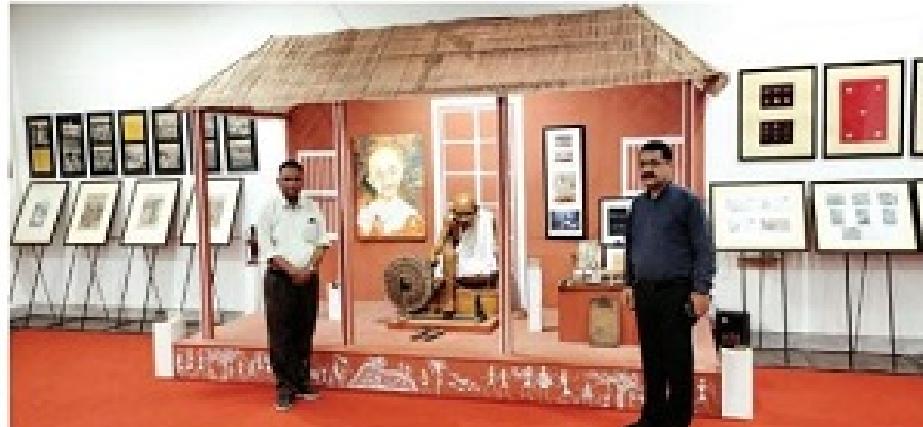


पिता को गांधी से लगाव था, तो लगातार मेहनत कर बना दिया गांधी म्यूजियम

(दैनिक मुद्रुल प्रिंटिंग)

चित्तीड़गढ़। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में जनकल्पणाकारी गवर्नर्शाम सरकार यहाँमा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए नई नई योजनाएं लागू कर प्रभावी किष्यान्वयन सुनिश्चित बत रही है। इसी जम में चित्तीड़गढ़ जिले के गंगारार रिश्वत मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी बातों को संबोधने के लिए अनुद्धा कार्य कर दिया था। जिसकी बाबती प्रश्नमा हो रही है। यूनिवर्सिटी में बेहद आकर्षक “प्रभाव जारी गांधी म्यूजियम” की स्थापना की गई है।

गांधी म्यूजियम में स्वतन्त्रता आनंदेशन के दौरान तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से सम्बन्धित घटनाओं के समाचारों की मूल छत्रनों को ज्ञानदात तरीके से सजाया गया है। सबसे ही गांधी छाग मिक्कले गए विभिन्न समाचार पत्र जैसे नवजीवन (अंक- 19 जून 1930), हरिजन (अंक- 13 जून 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है, जिसमें गांधी जी के लेख देखे जा सकते हैं। म्यूजियम में अई जियेशी मैगजीन एवं पत्र-परिकल्पों जैसे- LE MIROIR DU MONDE (पेरिस), Le Petit Journal, La Domenica del



Corriere (इतली), फांस इताल्यनेशन, अग्रसत ग्राफिक सर्वे आदि के कला पेज हैं जिन पर महात्मा गांधी को तस्वीर ढायी हैं। ये मैनडॉल एवं चर-परिकल्पों अंशीजी, पौच्छ, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में हैं। इनका अवलोकन कर प्रारंभ होता है कि उस समय गांधी का प्रकाशन सिर्फ भारत ही नहीं, थोड़े विश्व में ऐसे चैलेंजों की दिखाई देती है, जिसमें महात्मा गांधी को चरखा चलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति को गमकूज घोष और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के बास गांधी द्वारा उपयोग में लौट गई सामग्रियों की रोपिका दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर वाले पुस्तके मिक्कों एवं मेडल का भी यहाँ अनोखा बलेक्षण है।

इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दस्तों पोस्ट कार्ड एवं लिप्पियाँ को भी संबोधी कर रखा गया है। यहाँ समाचार पत्र ‘द स्टेट्समेन’ को दिनांक 31 जनवरी 1947 को प्रति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के शहीद होने के खबर हीनी तुर्क है। गांधी के भाषणों का संग्रह किये हुए कई पुस्तके डिस्क भी यहाँ संग्रहित कर रखी गई हैं।

म्यूजियम डाकोतार कर विद्युत प्रोफेसर डॉ. चित्तलेशा सिंह बताती हैं कि लेव के सिटीक

अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण बास्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम आया है।

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए गयामा गांधी के आकर्षक हाथ-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करते ही दर्शक एकाएक स्वत्व रह जाते हैं, जब उनकी टीम निगम बाएं और रिश्वत एक दीक्षार पर जाती है। यहाँ म्यूजियम डाकोतार विद्युत प्रोफेसर डॉ. चित्तलेशा सिंह के मार्गदर्शन में ओप्रे प्रकाश संस्था एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के

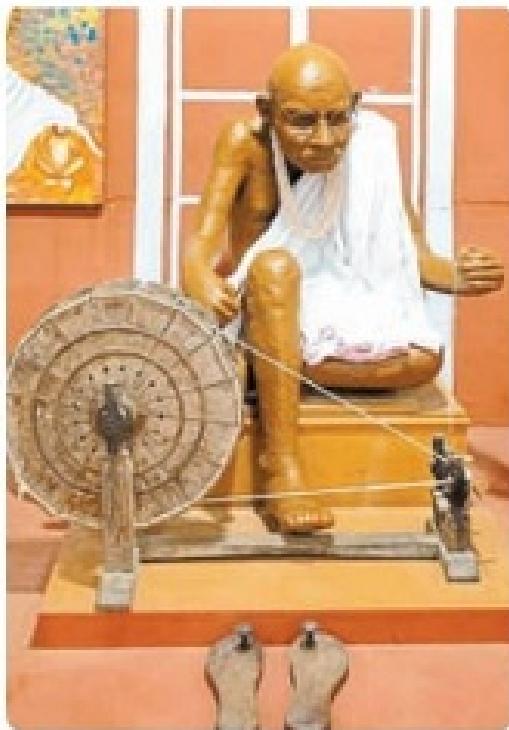
विभिन्न दम में रहे हाथ-भाव को सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। विभिन्न मुद्राओं में गांधी जी के हाथ-भाव बड़े आकर्षक प्रतीक होते हैं और इन्हें देखने वाला बस इन्हें निशाचरा रहना चाहता है। यहाँ आने वाले लोग इन चित्रों के साथ मैलकी लोग नहीं भूलते। इसके अलावा म्यूजियम में गांधी राइब्रेग्री भी बनाई गई है, जहाँ गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें हैं। गांधी पर रिसर्च करने वाले छात्र-छात्राएं यहाँ के शांत वातावरण में बैठक कर अध्ययन कर करता पसंद करते हैं।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूजियम

मेवाड़ एन्केशन मोसायटी अध्यय गोविन्द लाल गदिया बताते हैं कि उनके पिता स्वर्गीय भवेश्वरलाल गदिया गांधीवादी विचारों से संपर्क थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही वहाँने अपने भाई यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मेवर ऑड़ बोर्ड राधाकृष्ण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है। इस कार्य को पूरा करने में विद्युत प्रोफेसर डॉ. चित्तलेशा सिंह (डीन), डॉ. हरीश गुरुनानी, डॉ. गणेश, मिश्रोक अहमद मंसूरी आदि का प्रमुख योगदान रहा है।

आकोला, सोमियाचारा, पटुना, सुखवाड़ा, बसवी, बबराणा, निकुञ्ज, पारसोली

मेवाड़ यूनिवरसिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सपना



किंवीड़गढ़, मेवाड़ विश्वविद्यालय में स्थापित बापू की प्रतिमा।



पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

विश्वविद्यालय किंवीड़गढ़ विश्विकारों के कामर पेज हैं जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर लगी है। ये मेवाड़ विश्वविद्यालय, अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पैनिश, इंग्रिजीलैंग आदि भाषाओं में हैं। मेवाड़ विश्वविद्यालय में बोर्ड विश्वविद्यालय का विवरण है। 'उत्थम जैवी गांधी म्यूजियम' की व्याख्या भी नहीं है। म्यूजियम में स्वतन्त्रता अभियान के दौरान लकड़ीन स्वतन्त्रा वाली ये प्रतीकशित महात्मा गांधी के स्वतन्त्रा घटनाओं के स्वतन्त्रों की मूल कलानों और सान्धर तरीके से सज्जाय देते हैं। माथ की व्याख्या भी स्वतन्त्रता की अनेक कलोवतान है। कठीनी सौ दिनों की बाहर विश्वविद्यालय में उत्थम का संकलन भी यहाँ देखने को मिलता है। एक दृश्य में यह म्यूजियम गांधी के बाबूर और उक्तिएं दीप में बनता है। मृति के बास गांधी की ओर से उत्थम में ली गई समर्पित है।

ऐसे जैसे हैं।
विदेशी पत्र पत्रिकाओं
में गांधी

म्यूजियम में कई लिंगों में लोक एवं पत्रिकाओं के कामर पेज हैं जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर लगी है। ये मेवाड़ विश्वविद्यालय, अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पैनिश, इंग्रिजीलैंग आदि भाषाओं में हैं। मेवाड़ विश्वविद्यालय में लकड़ी वाली तस्वीरें हैं।



मेवाड़ विश्वविद्यालय में लकड़ी वाली तस्वीरें।

पत्रिका

सावरमती आश्रम की
झाँकी भी

गांधी म्यूजियम वाली फ्रैमेज़ तो विश्वविद्यालय की तस्वीर है। इनके बाहरी तस्वीरें भी सज्जाय देती हैं। इनके बाहरी तस्वीरों की विवरण देखने के लिए ही उन्हें अपने यह म्यूजियमीं आवास लो। अंदर कुमार गहिरा, नेत्र और लोहे राधाकृष्णन निर्देश एवं कुमारशंकरी ट्रैफ़ के लाख चित्र कर द्या गए हैं।

सावरमती आश्रम की झाँकी भी है संरक्षित। यह लकड़ा वाली जलाल जलाली द्वारा बनाया गया है। इनके बाहरी तस्वीरों की विवरण देखने के लिए ही उन्हें अपने यह म्यूजियमीं आवास लो। अंदर कुमार गहिरा, नेत्र और लोहे राधाकृष्णन निर्देश एवं कुमारशंकरी ट्रैफ़ के लाख चित्र कर द्या गए हैं।

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए महात्मा गांधी के आकर्षक हावः-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करने से दर्शक लकड़ी वाले हैं, जब उन्होंने नियम वाले और वित्त एवं दैवत पर जाती है। यहाँ ऐसे लकड़ी लकड़ी एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विवरण उपर में रहे लाख-चाल वाले सुधार विकल्पी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। यह आने वाले सोने हवा नियमों के माध्यम से लकड़ी लकड़ी नहीं चुनते। म्यूजियम में गांधी लकड़ी भी बहुत ज्यादा है, जहाँ गांधी की लकड़ी वर्ष उपयोगी दृसकी है। गांधी पर निर्माण करने वाले लाल-लालपांथ के बाल वालावाले में बैठक कर अवधारण कर करने पाएं जाते हैं।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूजियम

केवल एवं विद्यालय सेवापाठी अवस्था गोविन्द लकड़ी विकास के बाबत कि उनके नियम भवानीताल गविया नापीवाली विचारों के समर्पण हैं। उनके नियमों की वालावाले करने के लिए ही उन्हें अपने यह म्यूजियमीं आवास लो। अंदर कुमार गहिरा, नेत्र और लोहे राधाकृष्णन निर्देश एवं कुमारशंकरी ट्रैफ़ के लाख चित्र कर द्या गए हैं।

सावरमती के लकड़ी लकड़ी है। महात्मा का इस संकलन में अमर गांधी के भावानी का लोहा भी है। योगदान रहा है। मंसूरी ने बनाया से वर्ष पुराने विकल भी यह महात्मा गांधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वालुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम वाले बनाने के बाबती हैं। जिसके लिए उन्हें अकाम है।

मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सप्ना

गांधी की यादों को संजोने के लिए किया अनूठा कार्य पिता को गांधी से लगाव था, तो लगातार मेहनत कर बना दिया गांधी म्यूजियम

एजेन्सी @ जय कॉल्ड न्यूज

चित्तोड़गढ़ 10 जनवरी, मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के नित्यत्व में जनकल्याणकारी राजस्वान सरकार महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए नई नई योजनाएं साझा कर प्रभावी विध्ययन सुनिश्चित कर रही है। इसी क्रम में चित्तोड़गढ़ जिले के नगरार स्थित मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी यादों को संजोने के लिए अनूठा कार्य कर दिखाया है जिसकी काफी प्रशंसा हो रही है। यूनिवर्सिटी में बेहद आकर्षक "प्रभाव जोशी गांधी म्यूजियम" की स्थापना की गई है।

गांधी म्यूजियम में स्वतन्त्रता आनंदोलन के दैशन तत्कालीन समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से सम्बंधित घटनाओं के समाचारों की मूल कतरनों को शानदार तरीके से सजाया गया है। साथ ही गांधी द्वारा निकाले गए विभिन्न समाचार पत्र जैसे नवजीवन (अंक- 19 जून 1930), लरिजन (अंक- 13 फरवरी 1949) आदि जो भी प्रदर्शित किया गया है, जिसमें गांधी जी के सेख देखे जा सकते हैं। म्यूजियम में कई विदेशी

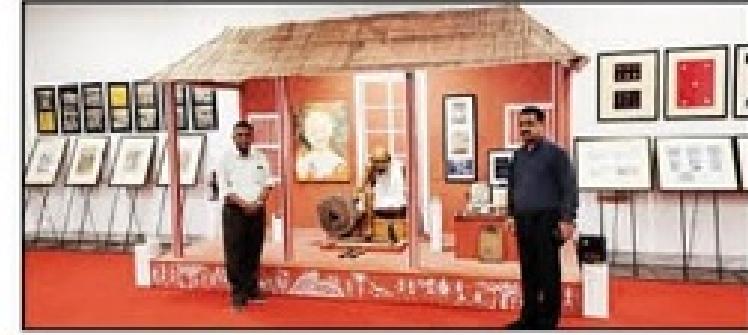
मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाओं जैसे- LE MIROIR DU MONDE (फ्रैंस), Le Petit Journal, La Domenica del Corriere (इटली), फ्रांस इलस्ट्रेशन, अगस्त ग्राफिक सर्वे आदि के कवर पेज हैं जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर दृष्टी है। ये मैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाएं अंग्रेजी, फ्रैंस, स्पेनिश, इटालियन आदि भाषाओं में हैं। इनका अवलोकन कर प्रतीत होता है कि उम समय गांधी का प्रकाश सिर्फ भारत ही नहीं, परे विश्व में फैल चुका था। गांधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं की तस्वीरों का माध्यम एक 'म' में लगा कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुण्ये अनदेखे फोटो और संक्षिप्त जानकारी है। यहीं गांधी पर प्रकाशित कई डाक टिकटों का भी अनोखा कलेक्शन उपलब्ध है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए मटाप्प का संकलन भी यहीं देखने को मिलता है।

बारिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (झीन) के निर्देशन में बने इस गांधी म्यूजियम में प्रवेश करते ही साथारम्भी आश्रम की होटी-सी झांकी दिखाई देती है, जिसमें महात्मा

गांधी को चरखा चलाते हुए दिखाया गया है। इस मूर्ति को गमकूण धोष और उनकी टीम ने बनाया है। मूर्ति के पास गांधी द्वारा उपयोग में ली गई सामग्रियों की रीशिलज्जा दिखाई गई है। गांधी की तस्वीर बाले पुण्ये मिलों एवं मेडल का भी यहीं अनोखा कलेक्शन है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दर्जनों पोस्ट कार्ड एवं लिप्सामों की भी संजो कर रखा गया है। यहीं समाचार पत्र 'द स्टेटमेन्ट' की दिनांक 31 जनवरी 1948 की प्रति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के शहीद होने के लिये हुए कई पुण्यी दिस्क भी यहीं संभाल कर रखी गई हैं।

म्यूजियम डाक्यूमेंटर बारिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह बताती है कि क्षेत्र के श्री सिंहोंक अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम आया है।

150 वित्रों के माध्यम से दिखाए गये संग्रह में गांधी जी के आकर्षक हाथ-भाव म्यूजियम में प्रवेश करते ही



दर्शक एकाएक सत्रध रह जाते हैं, जब उनकी निगाह याएं और स्थित एक दीवार पर जाती हैं। यहीं म्यूजियम डाक्यूमेंटर बारिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह के मानदंडन में ओम प्रकाश साल्ली एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न ऊ में रहे हाथ-भाव की सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। विभिन्न मुद्राओं में गांधी जी के हाथ-भाव बड़े आकर्षक प्रतीत होते हैं और इन्हें देखने वाला बस इन्हें निहारता रहना चाहता है। यहीं आने वाले लोग इन वित्रों के साथ सेलफी लेना नहीं भूलते। इसके अलावा म्यूजियम में गांधी लाइब्रेरी भी बनाई गई है, जहां गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें हैं। गांधी पर

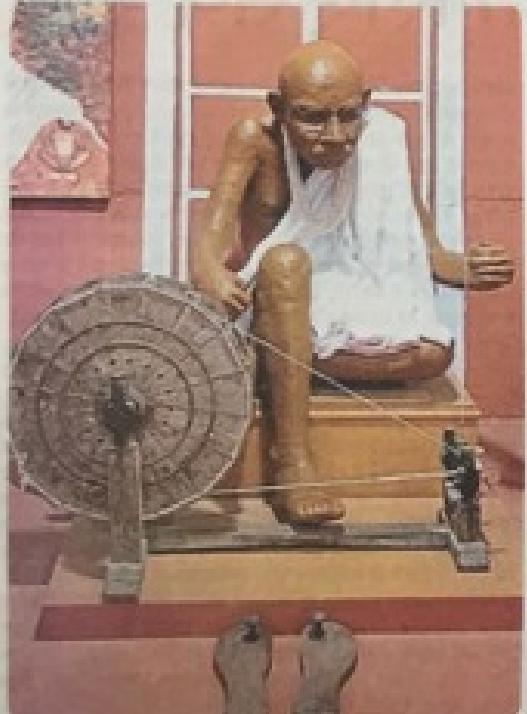
गिरफ्त करने वाले छात्र-छात्राएं यहीं

के शांत बालायरण में बैठक कर अध्ययन कर करना पसंद करते हैं।

पिता के सपने को साकार करने के लिए बनाया म्यूजियम

मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी अध्यक्ष श्री गोविन्द लाल नाईडी बताते हैं कि उनके पिता स्वामी श्री भवरलाल गदिया गांधीजी की विचारों से समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई यूनिवर्सिटी चांसलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मेवाड़ ऑफ बोर्ड ग्राहकूण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है। इस कार्य को पूरा करने में बारिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (झीन), डॉ. हरीश गुरनानी, डॉ. गर्जिं, सिंहुक अहमद मंसूरी आदि का प्रमुख योगदान रहा है।

मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सपना



विविध रूप विनाशकों में स्वरूप जग्य की गयी। विवरण

三



स्वीकृत चयन प्रैरक
प्राप्ति १००%

वित्तीयकाल। वित्तीयकाल जिसे के संसार विकल बोला गया विनियोगीटी ने महाकाल गोपी से जुड़ी गोपी की संस्कृती के लिए अनुरा वर्ष कर दिया था। विनियोगीटी से लेकर अवधीन उभय गोपी गोपी व्युत्प्रियम् भी समाजन की गई है। व्युत्प्रियम् में समाजका आदीनन के द्वितीय वर्षावालीन समाचर पढ़ो में इन्हें विश्व व्यापार गोपी से संबंधित घटनाओं के समाचारों की पूछ करतारों की उपलब्धता ताकी से समाचर नहीं है। सब तीन यात्रायां गोपी और से निष्ठान गर्व विभिन्न सम्बन्धों को देखे समाचार नहीं है। अप्रैल 19 (जून 1930), हॉर्टन (अप्रैल 13 अप्रैल 1949) अपने बोनी प्रारंभिक विषय बाबू है। यात्रा गोपी द्वारा देखी

ऐसे जा सकते हैं।
विदेशी पत्र पत्रिकाओं
में गांधी

मूर्तियों में वह चिरेशी दैनिक जीवन के वास्तविकता के काम पैदा हुए हैं जिन पर महान् वाणी की लकड़ी लगती है। वे दैनिक एवं व्यापारिक अंदरूनी, ब्रिट, स्टील, इलेक्ट्रिकन आदि वाचाओं ने ही वाणी के जीवनशाल की अवधारणा घटायी होते तात्पुरता के भविष्यत से एक छान में उत्तर कर दृष्टिशील विचार नहीं है, जिसमें उनके पुण्यने अवसरों परोंटों और स्टीलिन जलनशाली हैं। यहाँ वाणी पर उत्तराधिकारी वह एक विकटी का विद्युत अनुप्रयोग जलनशाल है। बड़ी वज़ाफ़ी से इनी हाथ बहाव वाणी वाणी की विकासने पर ध्यान एवं स्वास्थ्य का सबलालन भी वहाँ दिखते की विचार है। एक नज़र के यह मूर्तियों वाणी के हमारे ही अवश्यक होने का उत्तराधिकार है।



10. The following table shows the number of hours worked by 1000 workers in a certain industry.

150 चित्रों के माध्यम से दिखाए महात्मा
गांधी के आकर्षक हाथ-भाव

मृत्युपात्र में प्रोत्साहन करते ही दूसरे स्वामी एवं जाते हैं, जब उनकी नियम वार्षिक और विभिन्न तौर पर जाती है। यहाँ अधिक प्रश्नोत्तर समाजी एवं दीर्घ द्वारा मानाया जाता है कि विशिष्ट उपर्युक्त लाभ-प्रदान की सुन्दर विधिवारी के सम्बन्ध में 150 विवरण बना कर दिया जाया जाना है। यहाँ अधिक जाने लागत इन विविधों के स्वयं संस्कारों सेवा नहीं चाहीजे। मृत्युपात्र में नानी लालाकीर्ति भी कार्यवाची नहीं है, जहाँ यांची ही तुड़ी कई गणकांगों पुराणी है। यांची पर विसर्जन करने वाले स्वामी-स्वामीएवं यांचा विविध

तांग विद्युतीयम् में बैठक करने आवश्यक जल कारबाह प्रसाद कराने के पिता के सपने को साक्षात् करने के लिए बनाया प्रयत्नियम्

देवता एकान्तरात्मन् सोमवारी अवश्य गोविन्द लक्ष्म विद्युता ने बताता है कि उसके लिए प्रभावशाली वर्णिका वार्षिकीय विद्युता के समर्पक है। अपने गमने को समर्पण करने के लिए ही उसको अपने पास पूरीतर्मानिती चलाना है। असेही व्यक्ति विद्युता, वैद्यक और वैद्यक ग्रामान्धारा वर्णिका इस पूरीतर्मानी द्वारा के समर्पण कर इस गमने को पापा बिल्ला है।

स्वास्थ्य लोगों के स्वास्थ्य वृद्धि हुई है।
मात्री के भवनों का संख्या जूरी वृद्धि
कर्त्ता पुरानी दिवस भी यह संपादन
का एक हाथ है। मध्यस्थित इन्डोनेशिया,
विशेष द्विप्रतांत्री राजिकाओंका विवर
प्रतीत है कि देश के लिए अलग-
संस्कृत व इस संस्कृत की अवधि
विवरण द्वारा है। संस्कृत में विवरण द्वारा
ही प्राचीन ग्रन्थों से जुड़ी कई
विवरण विवरण विवरण का एक विवर
है, जो इस मध्यस्थित विवरण में
विवरण द्वारा है।

मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने साकार किया गांधी म्यूजियम का सप्ना

» पिता को गांधी से लगाव था, तो मेहनत कर बना दिया गांधी म्यूजियम

चित्तौड़गढ़, 10 सितम्बर (नस.)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में जन कल्याणकारी राजस्थान सरकार महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने के लिए नई-नई योजनाएँ लागू कर प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित कर रही है। इसी क्रम में जिले के मंगरार स्थित मेवाड़ यूनिवर्सिटी ने महात्मा गांधी से जुड़ी यादों को संजोने के लिए चेहद आकर्षक 'प्रभाप जोशी गांधी म्यूजियम' की स्थापना की है।

गांधी म्यूजियम में स्वतंत्रता आनंदोलन के दैर्घ्य तकलीफी समाचार पत्रों में प्रकाशित महात्मा गांधी से सम्बंधित घटनाओं के समाचारों की मूल कलरनों को शानदार तरीके से सजाया गया है। साथ ही गांधी द्वारा निकाले गए विभिन्न समाचार पत्र जैसे नवजीवन (अंक 19 जून 1930), हरिजन अंक-13 फरवरी 1949) आदि को भी प्रदर्शित किया गया है, जिसमें गांधी जी के लेख देखे जा सकते हैं। म्यूजियम में कई विदेशी पैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाओं जैसे LE MIROIR DU MONDE (पेरिस) Le Petit Journal, La Domenica del Corriere (इटली), फ्रांस इलम्स्ट्रेशन, अगस्त ग्राफिक सर्वे आदि के कवर खेज हैं, जिन पर महात्मा गांधी की तस्वीर छपी है। ये पैगजीन एवं पत्र-पत्रिकाएँ अंग्रेजी, फ्रेंच, ऐंग्रिश, इटालियन आदि भाषाओं में हैं। इनका अवलोकन कर प्रतीत होता है कि उस समय गांधी का प्रकाश सिफ्र भारत ही नहीं, पूरे विश्व में फैल चुका था। गांधी के जीवनकाल की अलग-अलग घटनाओं को तस्वीरों के माध्यम



150 चित्रों के माध्यम से गांधीजी के हाव-भाव

म्यूजियम में प्रवेश करते ही दर्शक एकाएक साथ रह जाते हैं, जब उनकी निगाह बाएँ ओर स्थित एक दीवार पर जाती है। यहाँ म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह के मार्गदर्शन में ओम प्रकाश साल्वी एवं टीम द्वारा महात्मा गांधी के विभिन्न उम्र में रहे हाव-भाव को सुन्दर चित्रकारी के माध्यम से 150 चित्र बना कर दिखाया गया है। विभिन्न मुद्राओं में गांधीजी के हाव-भाव बड़े आकर्षक प्रतीत होते हैं और इन्हें देखने वाला बस इन्हें निहारता रहना चाहता है। यहाँ आने वाले लोग इन चित्रों के साथ सेलफी लेना नहीं भूलते। इसके अलावा म्यूजियम में गांधी लाइब्रेरी भी बनाई गई है, जहाँ गांधी से जुड़ी कई उपयोगी पुस्तकें हैं। गांधी पर रिसर्च करने वाले छात्र-छात्राएँ यहाँ के शांत वातावरण में बैठक कर अध्ययन कर करना पसंद करते हैं।

एक क्रम में लगा कर प्रदर्शित किया गया है, जिसमें उनके पुराने अनदेखे फोटो और संक्षिप्त जानकारी है। यहाँ गांधी पर प्रकाशित कई डाक टिकटों का भी अनोखा कलेक्शन उपलब्ध है। करीब सौ देशों द्वारा महात्मा गांधी पर निकाले गए स्टाम्प का संकलन भी यहाँ देखने को मिलता है।

वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. चित्रलेखा सिंह (डीन)

पिता के सपने को किया साकार

मेवाड़ एजुकेशन सोसायटी अध्यक्ष गोविन्द लाल गदिया बताते हैं कि उनके पिता स्व. भवरलाल गदिया गांधीवादी विचारों से समर्थक थे। उनके सपने को साकार करने के लिए ही उन्होंने अपने भाई यूनिवर्सिटी चासलर डॉ. अशोक कुमार गदिया, मेवर ऑफ बोर्ड राधकृष्ण गदिया एवं यूनिवर्सिटी टीम के साथ मिल कर इस सपने को पूरा किया है। इस कार्य को पूरा करने में वरिष्ठ प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह, डॉ. हरीश गुरनानी, डॉ. राजर्जि, सिद्धीक अहमद मंसूरी आदि का प्रमुख योगदान रहा है।

अनोखा कलेक्शन है। इसके साथ ही गांधी पर प्रकाशित दर्जनों पोस्ट कार्ड एवं लिफाफों को भी संजो कर रखा गया है। यहाँ समाचार पत्र 'द स्टेट्समेन' की 31 जनवरी 1948 की प्रति भी संरक्षित है, जिसमें गांधी के शहीद होने के खबर छपी हुई है। गांधी के भाषणों का संग्रह किये हुए कई पुरानी डिस्क भी यहाँ संभाल कर रखी गई हैं।

म्यूजियम डायरेक्टर वरिष्ठ प्रो. डॉ. चित्रलेखा सिंह बताती है कि क्षेत्र के सिद्धीक अहमद मंसूरी का इस संकलन में अहम योगदान रहा है। मंसूरी ने बचपन से ही महात्मा गांधी से जुड़ी कई महत्वपूर्ण वस्तुओं का संग्रह किया है, जो इस म्यूजियम को बनाने में काम आया है।